REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 9 | ISSUE - 8 | MAY - 2020

''भारत के आर्थिक विकास में कृषि का महत्व''

डॉ.राजू रैदास
शोधार्थी – डी–लिट (वाणिज्य), अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय,
रीवा (म0प्र0) भारत.

परिचय – Introduction :-

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। भारत में कृषि सिंधु घाटी सभ्यता के दौर से की जाती रही है। 1960 के बाद कृषि के क्षेत्र में हरित क्रांति के साथ नया दौर आया। सन् 2007 में भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि एवं सम्बन्धित कार्यों (जैसे वानिकी) का सकल घरेलू उत्पाद (**GDP**) में हिस्सा 16. 6% था। उस समय सम्पूर्ण कार्य करने वालों का 51% कृषि में लगा हुआ था।

कृषि राष्ट्रीय आय का एक प्रधान स्रोत है। कृषिजन्य उत्पाद व्यापार (राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय) का एक अभिन्न एवं प्रमुख हिस्सा है। कृषि–उत्पादन मुद्रास्फीति दर पर अंकुश रखता है, उद्योगों की शक्ति प्रदान करता है, कृषक आय में वृद्धि करता है तथा रोजगार प्रदान करता है। कृषि का आर्थिक महत्व के साथ–साथ सामाजिक महत्व भी है।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरुदण्ड है। जहां एक ओर यह प्रमुख रोजगार प्रदाता क्षेत्र है। वहीं सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में इसका महत्वपूर्ण योगदान है। देश की लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या अपनी आजीविका हेतु कृषि पर ही निर्भर है। कृषि की सकल घरेलू उत्पादन में भागीदारी लगभग 22 प्रतिशत है। वस्तुतः ये तथ्य भारत को विकासशील देशों में शामिल करते विकसित राष्ट्रों में जहां सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की भागीदारी का प्रतिशत कम होता है वहीं वहां की अपेक्षाकृत कम जनसंख्या कृषि कार्यों में संलग्न होती है। उदाहरणार्थ ब्रिटेन व अमेरिका की राष्ट्रीय आय में कृषि की भागीदारी क्रमशः 2 तथा 3 प्रतिशत है।

कृषि के माध्यम से खाद्यान्न तो उपलब्ध होता ही है, साथ ही अनेक प्रमुख उद्योगों के लिए कच्चा माल भी उपलब्ध होता है (सूती वस्त्र उद्योग, जूट उद्योग, चीनी उद्योग, चाय उद्योग, सिगरेट उद्योग और तम्बाकू उद्योग, आदि)। कषि राष्ट्रीय आय का एक प्रधान स्रोत है। कृषिजन्य उत्पाद व्यापार (राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय) का एक अभिन्न एवं प्रमुख हिस्सा है। भारत द्वारा चाय, कपास, तिलहन, मसाला, तम्बाकू आदि का विश्व–व्यापार होता है। कृषिजन्य उत्पादों के आंतरिक व्यापार से परिवहन कर और अंतरराष्ट्रीय व्यापार से तटकर की आय में वृद्धि होती है, जो अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए नितांत आवश्यक है।

कृषि संपूर्ण राष्ट्र को प्रभावित करती है। कृषि–उत्पादन मुद्रास्फीति दर पर अंकुश रखता है, उद्योगों की शक्ति प्रदान करता है, कृषक आय में वृद्धि करता है तथा रोजगार प्रदान करता है। कृषि का आर्थिक महत्व के साथ–साथ सामाजिक महत्व भी है। यह क्षेत्र निर्धनता उन्मूलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्योंकि इस क्षेत्र में अधिकांश निर्धन लोग ही कार्यरत हैं और यदि कषि क्षेत्र का विकास होगा तो निर्धनता भी स्वतः समाप्त हो जायेगी।

आज, भारत खाद्यान्न में आत्मनिर्भर है, हालांकि बढ़ती जनसंख्या की खाद्यान्न जरूरतों को पूरा करने का दबाव भी भारत पर निरंतर बढ़ता जा रहा है। अंतरराष्ट्रीय पटल पर, विश्व में भारतीय कृषि के लिए, भविष्य में निहितार्थ रखेगा। भारत किस प्रकार इन चुनौतियों से निपटेगा, यह देखा जाना शेष है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि की भूमिका :–

वर्तमान समय मे कृषि शब्द व्यापक रूप मे प्रयुक्त होने लगा है, क्योंकि इसमे केवल खेती–बाड़ी ही नहीं आती बल्कि वन ,मछली पालन,पशु,दुग्ध उत्पादन को भी शामिल किया गया है द्य भारत एक कृषि प्रधान देश है और भारतीय अर्थव्यवस्था मे कृषि क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है, कृषि **Indian economy** की जीवन रेखा है ,लेकिन वर्तमान समय आकड़ों मे कृषि क्षेत्र मे काफी गिरावट दिख रही है द्य हर क्षेत्र की हर गतिविधिया सम्पूर्ण राष्ट्र कों किसी न किसी रूप से प्रभावित करती है द्य भारत मे गरीबी मिटाने मे भी कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है ,जो अर्थव्यवस्था के लिए . संकेत है

द्य लगातार दशकों से हो रही गिरावट के बहुत से कारक है आइए जानते है।

इतिहास :–

भारत में कृषि में 1960 के दशक के मध्य तक पारंपरिक बीजों का प्रयोग किया जाता था जिनकी उपज अपेक्षाकृत कम थी। उन्हें सिंचाई की कम आवश्यकता पड़ती थी। किसान उर्वरकों के रूप में गाय के गोबर आदि का प्रयोग करते थे।

1960 के बाद उच्च उपज बीज (HYV) का प्रयोग शुरू हुआ। इससे सिंचाई और रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का प्रयोग बढ़ गया। इस कृषि में सिंचाई की अधिक आवश्यकता पड़ने लगी। इसके साथ ही गेहूँ और चावल के उत्पादन में काफी वृद्धी हुई जिसके कारण इसे हरित क्रांति भी कहा जाता है।

कृषि औजार :–

भारत में कृषि में परंपरागत औजारों जैसे फावड़ा, खुरपी, कुदाल, हँसिया, बल्लम, के साथ ही आधुनिक मशीनों का प्रयोग भी किया जाता है। किसान जुताई के लिए ट्रैक्टर, कटाई के लिए हार्वेस्टर तथा गहाई के लिए थ्रेसर का प्रयोग करते हैं।

भारत में सिंचाई :–

भारत में सिंचाई का मतलब खेती और कृषि गतिविधियों के प्रयोजन के लिए भारतीय नदियों, तालाबों, कुओं, नहरों और अन्य कृत्रिम परियोजनाओं से पानी की आपूर्ति करना होता है। भारत जैसे देश में, ६४ % खेती करने की भूमि, मानसून पर निर्भर होती है। भारत में सिंचाई करने का आर्थिक महत्त्व है – उत्पादन में अस्थिरता को कम करना, कृषि उत्पादकता की उन्नती करना, मानसून पर निर्भरता को कम करना, खेती के अंतर्गत अधिक भूमि लाना, काम करने के अवसरों का सृजन करना, बिजली और परिवहन की सुविधा को बढ़ाना, बाढ़ और सूखे की रोकथाम को नियंत्रण में करना।

उत्पादन में भारत का स्थान :–

- पहला स्थान : गन्ना, बाजरा, जूट, अरंडी, आम, केला, अंगूर, कसाबा, मटर, अदरक, पपीता और दूध।
- दूसरा स्थान : गेहूँ, चावल, फल और सब्जियाँ, चाय, आलू, प्याज, लहसुन, चावल, बिनौला।
- तीसरा स्थान : उर्वरक

कृषि संस्थान :–

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली
- जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर
- इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय, रायपुर
- गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पन्तनगर
- चन्द्र शेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कानपुर
- चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
- लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार
- यशवन्त सिंह परमार औद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन
- राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा
- बिरसा कृषि विश्वविद्यालय, काँके
- राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर।

भारतीय कृषि की विशेषताएं :–

(i) आजीविका का स्रोत :– हमारे देश में कृषि मुख्य व्यवसाय है। यह कुल आबादी के लगभग 61% व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करती है। यह राष्ट्रीय आय में करीबन 25 % का योगदान देती है।

(ii) मानसून पर निर्भरता :– हमारी भारतीय कृषि मुख्यतः मानसून पर निर्भर करती है। अगर मानसून अच्छा आया तो कृषि अच्छी होती है अन्यथा नहीं।

(iii) श्रम गहन खेती :– जनसंख्या में वृद्धि के कारण भूमि पर दबाव बढ़ गया है। भूमि जोत के टुकड़े–टुकड़े हो जाते हैं और उपविभाजित हो जाते हैं। ऐसे खेतों पर मशीनरी और उपकरण का उपयोग नहीं किया जा सकता है।

(iv) बेरोजगारी :–पर्याप्त सिंचाई साधनों के अभाव में और अपर्याप्त वर्षा के कारण किसान वर्ष के कुछ महीने ही कृषि–कार्यों में संलग्न रहते हैं। जिस कारण बाकी समय तो खाली ही रहते है। इसे छिपी बेरोजगारी भी कहते है।

(v) जोत का छोटा आकार :– बड़े पैमाने पर उप–विभाजन और जोत के विखंडन के कारण, भूमि के जोत का आकार काफी छोटा हो जाता है। छोटे जोत आकार के कारण उच्च स्तर की खेती करना मुमकिन नहीं होता है।

(vi) उत्पादन के पारंपरिक तरीके :– हमारे देश में पारंपरिक खेती का चलन है। केवल खेती ही नहीं अपितु इसमें प्रयुक्त होने वाले उपकरण भी पुरातन एवं पारंपरिक हैं, जिससे उन्नत खेती नहीं हो पाती।

(vii) कम कृषि उत्पादन :– भारत में कृषि उत्पादन कम है। भारत में गेहूं प्रति हेक्टेयर लगभग 27 क्विंटल का उत्पादन होता है, फ्रांस में 71.2 क्विंटल प्रति हेक्टेयर और ब्रिटेन में 80 क्विंटल प्रति हेक्टेयर का उत्पादन होता है। एक कृषि मजदूर की औसत वार्षिक उत्पादकता भारत में 162 डालर, नार्वे में 973 डालर और यूएसए में 2408 डालर आंकी गयी है।

(viii) खाद्य फसलों का प्रभुत्व :– खेती किए गए क्षेत्र का करीब 75% गेहूं, चावल और बाजरा जैसे खाद्य फसलों के अधीन है, जबकि लगभग 25% खेती क्षेत्र वाणिज्यिक फसलों के तहत है। यह प्रक्रिया पिछड़ी कृषि के कारण है।

भारतीय कृषि अर्थव्यवस्था मे मुख्य छः प्रकार के सहयोग कृषि :–

1. कच्चा माल व खाद्य सामग्री पैदा करना।
2. कृषि औजारों एव उर्वरकों की खरीद कर औधोंगिक उत्पादों का उपयोग करना।
3. औधोंगिक क्षेत्रों को रोजगार उपलब्ध करना।
4. कृषि उत्पादों का निर्यात करके विदेशी मुद्रा देश मे लाना।
5. देश की बढ़ती हुई बेरोजगारी को कृषि क्षेत्र मे रोजगार के अवसर बढ़ाता है।
6. बढ़ती हुई देश की आबादी के लिए खाद्य सुरक्षा प्रदान करता है।
7. कृषि मे बहुत बड़ी संख्या मे रोजगार देने की संभावना छिपी हुई है।

कृषि के प्रमुख प्रकार (Types of agriculture in hindi) :–

भारत एक कृषि प्रधान देश है कृषि यहाँ के लोगों की जीविका का मुख्य साधन हैं। यहां की लगभग 54 प्रतिशत आबादी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। भारत में कुल 15 कृषि जलवायुवीक प्रदेश पाए जाते हैं। भारत की जलवायु विशेषकर तापमान वर्षभर कृषि उत्पादन के अनुकूल रहता है जलवायु की विविधता के कारण भारत में उष्ण उपोषण शीतोष्ण सभी फसलें उगाई जाती हैं।

भारतीय कृषि को मौसम पर आधारित तीन फसली मौसमों में बांटा गया है :–

1. रबी फसल (Rabi crop) :–

- शीत ऋतु की फसलें रबी कहलाती है।
- इन फसलों की बुआई के समय कम तापमान तथा पकते समय खुश्क और गर्म वातावरण की आवश्यकता होती है।
- फसलें सामान्यता अक्टूबर–नवंबर में बोई जाती हैं और मार्च–अप्रैल में काट ली जाती हैं
- इसके अंतर्गत प्रमुख फसलें गेहूं, जो, चना, मटर, सरसों,राई बरसीम, आलू, मसूर, लुसर्न, आदि।

2. खरीफ फसल (Kharif crop) :–

- यह वर्षाकाल की फसलें है।
- इन फसलों को बोते समय अधिक तापमान एवं आर्द्रता तथा पकते समय शुष्क वातावरण की आवश्यकता होती है।
- जो दक्षिण पश्चिम मानसून के प्रारंभ के साथ बोई जाती हैं और सितंबर अक्टूबर तक काट ली जाती हैं
- इसके अंतर्गत ज्वार, बाजरा, धान, मक्का, मूंग, सोयाबीन, लोबिया, मूंगफली, कपास, जूट, गन्ना, तम्बाकू, आदि।

3. जायद फसल (Zayed crop)

- एक अल्पकालिक ग्रीष्म ऋतु की फसल है जो रबी एवं खरीफ के मध्यवर्ती काल में मार्च में बोकर जून तक ले जाती है।
- इस वर्ग की फसलों में तेज गर्मी और शुष्क हवाएँ सहन करने की अच्छी क्षमता होती हैं।

- इसमें सिंचाई की सहायता से सब्जियों तथा खरबूजा, ककड़ी, खीरा, करेला, की कृषि की जाती है एवम,मूंग, उड़द, कुल्थी दलहनी फसलें उगाई जाती हैं इसे दो श्रेणी में रखा जाता है

भारतीय कृषि का स्वरूप :–

स्वतंत्रता प्राप्ति के दशकों बाद कृषि का उत्पादन कई गुणा बढ़ चुका है। किंतु भारतीय कृषि में व्याप्त कुछ कारक इसके संतुलित विकास व वृद्धि में अवरोधक हैं।

अभी भी भारत में प्रतिहेक्टेयर भूमि में उत्पादन का स्तर बहुत ही न्यून है। कृषि के विकास के लिए नयी तकनीक, मशीनरी तथा नव–विकसित बीजों को अपनाकर यदि कृषि के क्षेत्र में कदम बढ़ाया जाए, तो हम विश्व के प्रमुख देशों के उत्पादन–स्तर से अधिक हासिल कर सकते हैं। कृषि को उद्योग का दर्जा देना नितांत आवश्यक है। भारत में अधिकांश कृषि क्षेत्र अल्प–वर्षा वाले हैं और वहां सिंचाई की सुविधा भी बहुत ही सीमित है। बहुत–से क्षेत्र बाढ़ और सूखा जैसी प्राकृतिक आपदा से त्रस्त हैं। यहां मिट्टी का वितरण भी विभिन्न क्षेत्रों में असमान ही है, इसलिए विभिन्न प्रकार की फसलें उत्पादित होती हैं।

हमारे कृषक आज भी निरंतर कृषि की परम्परागत तकनीक का इस्तेमाल करते हैं और अधिकतर निर्वाह कृषि ही करते हैं। वित्तीय बाधाएं लघु एवं सीमांत कृषकों को उत्पादकता एवं उत्पादन में वृद्धि करने हेतु खेती की आधुनिक पद्धति को अपनाने से रोकती है। भारतीय कृषि अभी भी व्यापक रूप से सिंचाई हेतु मानसून पर निर्भर करती है। लगभग 60 से 70 प्रतिशत विशुद्ध बुवाई क्षेत्र निरंतर सिंचाई की अपेक्षा वर्षा के जल पर निर्भर रहता है। खस्ताहाल विपणन एवं भण्डारण व्यवस्था भी भारतीय कृषि की समस्याओं का बखान करती हैं।

निम्न उत्पादकता के कारण :–

भारतीय कृषि की उत्पादकता शेष विश्व के सापेक्ष निम्न रही है। निम्न उत्पादकता के कारण भूमि, श्रम व अन्य साधनों का समुचित उपयोग नहीं हो पाता है। निम्न उत्पादकता के निम्नलिखित कारण हैं :–

1. भूस्वामित्व एवं वास्तविक कृषक :– भारत में जमींदारी प्रथा के कारण भूमि का स्वामित्व जमींदारों, मध्यस्थ, सूदखोर, महाजन इत्यादि के हाथ में रहा जिसके कारण जोतदार (वास्तविक किसान) को भूमि सुधार, सिंचाई सुविधाएं स्थापित करने एवं अन्य माध्यमों से कृषि की उत्पादकता बढ़ाने का प्रोत्साहन नहीं मिला। ऐसा कृषक के पट्टेदारी अधिकारों के असुरक्षित होने के कारण हुआ। ऐसी स्थिति में मात्र प्रौद्योगिकी सुधारों के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि नहीं की जा सकती थी। उत्पादकता में वृद्धि के लिए भूमि सुधार आवश्यक हो जाते हैं।

2.जीवन–निर्वाह कृषि :–कृषि क्षेत्र में 2 हैक्टेयर से कम आकार वाले जीतों की बाहुल्यता है। ऐसी जोतों पर आधुनिक कृषि पद्धति को अंगीकार नहीं किया जा सकता था। दूसरे, सहकारी कृषि के माध्यम से छोटी जोतों को वृहत् आकार प्रदान करने एवं कृषि की आधुनिक पद्धति अपना कर उत्पादकता बढ़ाने के प्रयासों को पूर्ण उत्साह के साथ लागू नहीं किया गया। ऐसी जोतों पर कृषि मात्र जीवन निर्वाह के लिए की जाती है।

3. अल्प पूंजी आधार :–अधिकांश कृषकों के पास पूंजी का अभाव है, जिसके कारण वे आधुनिक प्रौद्योगिकी के लाभों को नहीं उठा पाते हैं। अल्प पूंजी के कारण वे न तो सिंचाई सुविधाओं में निवेश कर पाते हैं और न ही फार्म–मशीनीकरण की दिशा में कदम उठा पाते हैं।

4.मानसून पर निर्भरता :– भारतीय कृषि उत्पादन मानसून के प्रति अतिसंवेदनशील है। सही समय पर मानसून आने का अर्थ अच्छी फसल का होना है। यदि मानसून सही समय पर नहीं आता है तो फसल उत्पादन बुरी तरह प्रभावित होता है। वृहत् सिंचाई सुविधाओं पर अत्यधिक बल देने तथा लघु सिंचाई सुविधाओं के कारण मानसून के प्रति भारतीय कृषि क्षेत्र की निर्भरता बढ़ी है। हरित क्रांति के बाद के काल में उत्पादकता बढ़ाने की अनिवार्य शर्त के रूप में सिंचाई साधनों का विस्तार भी है। समग्र आर्थिक विकास में कृषि के महत्व के परिप्रेक्ष्य में उत्पादकता वृद्धि के लिए मानसून पर निर्भर रहना उचित नहीं है। मानसून समय पर न आने की परिस्थिति में भी कृषि उत्पादन पर विपरीत प्रभाव नहीं पड़ने देने के लिए वैकल्पिक सिंचाई साधनों का विकास अनिवार्य हो जाता है।

5. जनसंख्या दबाव :– आजादी के बाद भारत की जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ी है। साथ ही भूमि पर जनसंख्या के दबाव में निरंतर वृद्धि हुई है। आजादी के पश्चात कृषि के अधीन नवीन भूमि लाने के बावजूद विगत वर्षों में प्रति व्यक्ति कृषि भूमि घटी है।

6. मिट्टी की प्रकृति :– भारत में अनेक प्रकार की मिट्टी पाई जाती है जो सामान्यतः उर्वरक है परंतु निरंतर कृषि के कारण मिट्टी की उर्वरता में कमी आई है। मिट्टी की उर्वरकता को कायम रखने के लिए नाइट्रोजन स्थिरीकरण जैसे वैज्ञानिक तरीकों को नहीं अपनाया गया।

7.कृषि सुविधाओं का अभाव :– भारत में अल्प कृषि उत्पादकता की पृष्ठभूमि में कृषि सुविधाओं का अभाव भी महत्वपूर्ण कारण है। कृषकों को पर्याप्त विपणन व साख सुविधाएं उपलब्ध नहीं हो पाती हैं, जिससे वे न तो आवश्यक निवेश ही कर पाते हैं और न ही सही समय पर अपने उत्पादों की बिक्री कर पाते हैं।

भारत के विकास में कृषि का योगदान :–

भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण है। देश के कुल निर्यात व्यापार में कृषि उत्पादित वस्तुओं का प्रतिशत काफी अधिक रहता है। भारत में आवश्यक खाद्यान्न की लगभग सभी पूर्ति कृषि के माध्यम से ही की जाती है। वर्तमान समय में भी एक बहुत बड़ी आबादी को कृषि के माध्यम से रोजगार प्राप्त है। यह ऐसे में बहुत महत्त्वपूर्ण हो जाता है, जबकि देश में बेरोजगारी की समस्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही है। भारतीय कृषि को 'देश की रीढ़' माना गया है, क्योंकि यही वह उपाय है, जो देश की खुशहाली के लिए अत्यंत आवश्यक है।

कृषि विरोधी बिल पारित करने से पहले सरकार को पूर्व के दिनों में देश हित मे दिए गए किसानों के योगदान को एक बार देखना चाहिए। बहरहाल राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि के महत्व को कभी भारत अस्वीकार कर ही नहीं सकता। क्योंकि कृषि भारत के अर्थव्यवस्था के लिए सिर्फ एक अंग नहीं बल्कि संपूर्ण अंगों का ढांचा है।

अगर सच पूछा जाए तो देश का विकास कृषि पर ही निर्भर है। इसी वजह से महान स्वतंत्रता सेनानी भारत के पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कृषि के बारे में कहा था कि कृषि को सर्वाधिक प्राथमिकता देने की आवश्यकता है।

पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के इस बयान का स्पष्टीकरण हमें प्रथम पंचवर्षीय योजना (1951 56) में देखने को मिल सकता है। जिसमें पंडित जवाहरलाल नेहरू ने तत्कालीन अर्थशास्त्रियों से विचार करके सबसे ज़्यादा निवेश कृषि क्षेत्र में किया है।

कृषि क्षेत्र का राष्ट्र को समर्पित कुछ महत्वपूर्ण कार्य :–

1) रोजगार :– 160 करोड़ की विशाल जनसंख्या वाली इस देश में बेरोजगारी सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा मानी जाती है। लेकिन इस विशाल जनसंख्या वाले देश की लगभग 50% के करीब जनता की बेरोजगारी की दूरी कृषि क्षेत्र से होती है। भारत जैसे विशाल देश में सबसे ज़्यादा रोजगार देने वाला क्षेत्र अगर कोई है तो वह कृषि है।

2) राष्ट्रीय आय का मुख्य स्रोतद्द भारत में राष्ट्रीय आय का मुख्य स्रोत कृषि है। राष्ट्रीय आय में कृषि की भूमिका हम इस तरह माप सकते हैं कि 1990–91 में राष्ट्रीय आय में कृषि की कुल भूमिका 80% थी।

3) विदेशी व्यापार में कृषि क्षेत्र का महत्वद्द देश के द्वारा किए जा रहे विदेशी व्यापार में कृषि का महत्व बहुत ज़्यादा माना जाता है। क्योंकि देश के कुल निर्यात में 25% भाग कृषि एवं उससे संबंधित कच्चे पदार्थों पर आधारित उद्योगों के द्वारा किया जाता है।

4) औद्योगिक क्षेत्र में कृषि का महत्वद्द कृषि क्षेत्र देश के औद्योगिक विकास का भी आधार है। देश के अधिकांश उद्योगों को कच्चे माल की प्राप्ति कृषि क्षेत्र से ही होती है। जैसे :– सूती वस्त्र उद्योग, चीनी उद्योग, काफी, रबर, वनस्पति घी इत्यादि। इन सभी औद्योगिक वस्तुओं की उत्पत्ति कृषि क्षेत्र से हो पाती है।

5) भूमि का सर्वाधिक उपयोगद्द वर्तमान समय में देश के 32.87 करोड़ हेक्टेयर क्षेत्र में 14.3 हेक्टेयर भूमि पर खेती की जाती है। जो कुल भूमि के क्षेत्रफल का करीब 44% भाग होता है।

6) सरकारी आय में कृषि का योगदानद्द राजस्व में अगर कृषि के योगदान को देखें तो इसका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। देश में करोड़ों रुपए प्रति वर्ष की आय कृषि आय कर से होती है। इसके अतिरिक्त निर्यात व्यापार से भी सरकार को आय प्राप्त होती है।

7) पशुपालन में बढ़ोतरी की सबसे म मुख्य भूमिका कृषि की :– देश में दूध,दही एवं घी का भंडारण का भी मुख्य स्रोत कृषि को ही माना जाना चाहिए। क्योंकि गाय, बैल, भैंस, बकरी इत्यादि की व्यवस्था भी कृषि क्षेत्र ही करता है।

8) विश्व में भारतीय कृषि क्षेत्र का महत्व :– देश कृषि क्षेत्र का अंतरराष्ट्रीय महत्व भी है क्योंकि भारत का विश्व उत्पादन की दृष्टि से चाय एवं मूंगफली में प्रथम स्थान है। तथा चावल, कपास, गन्ने एवं जुट में दूसरा स्थान है। भारतीय कृषि क्षेत्र को लाख के उत्पादन में एक अधिकार प्राप्त है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि कृषि देश की अर्थव्यवस्था की आर्थिक कुंजी है। अगर कृषि का विकास सही रूप से नहीं हो पा कृषि क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था का आधारभूत स्तंभ है। यह क्षेत्र न केवल भारत की जीडीपी में लगभग 15: का योगदान करता है बल्कि भारत की लगभग आधी जनसंख्या रोजगार के लिये कृषि क्षेत्र पर ही निर्भर है। यह क्षेत्र द्वितीयक उद्योगों के लिये प्राथमिक उत्पाद भी उपलब्ध करवाता है।

कृषि का महत्व (Importance of agriculture) :–

भारत कृषि प्रधान देश है। 71% लोग गाँवों में रहते हैं और इनमें से अधिकांश कृषि पर निर्भर हैं। इसलिए कृषि के विकास से अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलता है। कृषि की प्रगति के बिना उद्योग, व्यापार और परिवहन की प्रगति असंभव है। कीमतों की स्थिरता कृषि विकास पर भी निर्भर करती है।

कृषि हमारी अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी है। कृषि न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि हमारे सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन पर इसका गहरा प्रभाव है। जवाहर लाल नेहरू के शब्दों में,

''कृषि को सर्वोच्च प्राथमिकता की आवश्यकता थी क्योंकि अगर कृषि सफल नहीं होगी तो सरकार और राष्ट्र दोनों ही विफल हो जाएंगे'' यद्यपि उद्योग भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं, फिर भी भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि के योगदान को नकारा नहीं जा सकता है।

इसे निम्न तथ्यों और आंकड़ों द्वारा मापा और देखा जा सकता है :–

1.राष्ट्रीय आय पर कृषि प्रभाव :–

सकल घरेलू उत्पाद की ओर पहले दो दशकों के दौरान कृषि का योगदान 48 से 60% के बीच रहा। वर्ष 2001–2002 में, यह योगदान घटकर केवल 26% रह गया।

2. सरकारी बजट में योगदान :–

प्रथम पंचवर्षीय योजना से कृषि को केंद्र और राज्य दोनों के बजट के लिए प्रमुख राजस्व संग्रह क्षेत्र माना जाता है। हालाँकि, सरकारें कृषि और इसकी सहयोगी गतिविधियों जैसे मवेशी पालन, पशुपालन, मुर्गी पालन, मछली पालन इत्यादि से भारी राजस्व कमाती हैं। भारतीय रेलवे राज्य परिवहन प्रणाली के साथ–साथ कृषि उत्पादों के लिए माल ढुलाई शुल्क के रूप में एक सुंदर राजस्व भी कमाती है, दोनों अर्ध–समाप्त और समाप्त कर दिया।

3. कृषि बढ़ती जनसंख्या के लिए भोजन का प्रावधान करती है :–

भारत जैसे जनसंख्या श्रम अधिशेष अर्थव्यवस्थाओं के अत्यधिक दबाव और भोजन की मांग में तेजी से वृद्धि के कारण, खाद्य उत्पादन तेज दर से बढ़ता है। इन देशों में भोजन की खपत का मौजूदा स्तर बहुत कम है और प्रति व्यक्ति आय में थोड़ी वृद्धि के साथ, भोजन की मांग में तेजी से वृद्धि हुई है (दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि विकासशील देशों में भोजन की मांग की आय लोच बहुत अधिक है)। इसलिए, जब तक कृषि खाद्यान्नों के अधिशेष के विपणन में लगातार वृद्धि करने में सक्षम नहीं होती, तब तक एक संकट उभरने जैसा है। कई विकासशील देश इस चरण से गुजर रहे हैं और मा के लिए बढ़ती खाद्य आवश्यकताओं के लिए कृषि का विकास किया गया है।

4. पूंजी निर्माण में योगदान :–

आवश्यकता पूंजी निर्माण पर सामान्य सहमति है। चूंकि भारत जैसे विकासशील देश में कृषि सबसे बड़ा उद्योग है, इसलिए यह पूंजी निर्माण की दर को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यदि यह ऐसा करने में विफल रहता है, तो पूरी प्रक्रिया आर्थिक विकास को झटका देगी।

कृषि से अधिशेष निकालने के लिए निम्नलिखित नीतियाँ ली जाती हैं :–

- खेत गैर–कृषि गतिविधियों से श्रम और पूंजी का हस्तांतरण।
- कृषि का कराधान इस तरह से होना चाहिए कि कृषि पर बोझ कृषि को प्रदान की गई सरकारी सेवाओं से अधिक हो। इसलिए, कृषि से अधिशेष की पीढ़ी अंततः कृषि उत्पादकता को बढ़ाने पर निर्भर करेगी।

5. कृषि आधारित उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति :–

कृषि विभिन्न कृषि आधारित उद्योगों जैसे चीनी, जूट, सूती वस्त्र और वनस्पती उद्योगों को कच्चे माल की आपूर्ति करती है। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग इसी तरह कृषि पर निर्भर हैं। इसलिए इन उद्योगों का विकास पूरी तरह से कृषि पर निर्भर है।

6. औद्योगिक उत्पादों के लिए बाजार :–

औद्योगिक विकास के लिए ग्रामीण क्रय शक्ति में वृद्धि बहुत आवश्यक है क्योंकि दो–तिहाई भारतीय आबादी गांवों में रहती है। हरित क्रांति के बाद बड़े किसानों की क्रय शक्ति उनकी बढ़ी हुई आय और नगण्य कर बोझ के कारण बढ़ गई।

7. आंतरिक और बाहरी व्यापार और वाणिज्य पर प्रभाव :–

भारतीय कृषि देश के आंतरिक और बाहरी व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। खाद्यान्न और अन्य कृषि उत्पादों में आंतरिक व्यापार सेवा क्षेत्र के विस्तार में मदद करता है।

8. कृषि रोजगार पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है :–

भारत में कम से कम दो–तिहाई श्रमिक आबादी कृषि कार्यों के माध्यम से अपना जीवन यापन करती है। भारत में अन्य क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ने में विफल रहे हैं।

9. श्रम शक्ति की आवश्यकता :–

निर्माण कार्यों और अन्य क्षेत्रों में बड़ी संख्या में कुशल और अकुशल श्रमिकों की आवश्यकता होती है। इस श्रम की आपूर्ति भारतीय कृषि द्वारा की जाती है।

10.अधिक से अधिक लाभ :–

कम कृषि लागत और इनपुट आपूर्ति में आत्मनिर्भरता के कारण भारतीय कृषि को निर्यात क्षेत्र में कई कृषि वस्तुओं में लागत लाभ है।

11. भोजन का मुख्य स्रोत :–

कृषि राष्ट्र के लिए भोजन प्रदान करती है। 1947 से पहले हमारे पास भोजन की कमी थी, लेकिन 1969 के बाद कृषि में हरित क्रांति ने हमें खाद्य उत्पादन में आत्मनिर्भर बना दिया। 2003–04 में चावल का उत्पादन 870 लाख मीट्रिक टन और गेहूं का 721 लाख मीट्रिक टन था।

12. परिवहन :–

खेतों से उपभोक्ताओं और कृषि कच्चे माल को बाजारों और कारखानों में ले जाने के लिए परिवहन के साधनों की आवश्यकता होती है। बाजार और कारखानों से रासायनिक खाद, बीज, डीजल और कृषि उपकरण लेने के लिए भी परिवहन की आवश्यकता है।

13. बचत का स्रोत :–

हरित क्रांति ने उत्पादन को कई गुना बढ़ा दिया है और किसान समृद्ध हो गए हैं। इन किसानों द्वारा अर्जित अतिरिक्त आय को बचाया जा सकता है और बैंकों में निवेश किया जा सकता है।

14. पूंजी निर्माण :–

कृषि पूंजी निर्माण में भी मदद करती है। कृषि उत्पादन से अधिशेष आय को अन्य स्रोतों जैसे बैंक, शेयर आदि में निवेश किया जा सकता है। ट्रैक्टर और हार्वेस्टर का उपयोग पूंजी निर्माण को बढ़ाता है।

15.अंतर्राष्ट्रीय महत्व :–

भारत मूंगफली और गन्ने के उत्पादन में शीर्ष स्थान पर है। चावल और स्टेपल काटन के उत्पादन में इसका दूसरा स्थान है। तंबाकू के उत्पादन में इसका तीसरा स्थान है। हमारे कृषि विश्वविद्यालय अन्य विकासशील देशों के लिए रोल माडल के रूप में काम कर रहे हैं।

निष्कर्ष :–

अर्थशास्त्री, जैसे टी.डब्ल्यू. शुल्ट, जान डब्ल्यू. मेलोर, वाल्टर ए.लुईस और अन्य अर्थशास्त्रियों ने यह साबित किया है कि कृषि और कृषक आर्थिक विकास के अग्र–दूत है जो इसके विकास में अत्यधिक योगदान देते है। जैसे औद्योगिक श्रमिकों को मजदूरी के सामानों की आपूर्ति करके, कृषि से वित्त के लिए अधिशेष को हस्तांतरित करके, औद्योगीकरण के लिए, कृषि क्षेत्र के लिए निवेश के रूप में उद्योग के उत्पाद का उपयोग करके और अधिरिक्त श्रम को कृषि से औद्योगिक नौकरियों में स्थानांतरित करके देश के विकास में योगदान दे रहें है।

सन्दर्भ गन्थ सूची :–

1.पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार. 9 जुलाई 2014. मूल से 14 जुलाई 2014
2.Indian Agriculture. U.S. Library of Congress
3.Indian Council for Agricultural Research
4.Website of The Indian Farmers Association
5.www.google.com/wikipedia.com
6. www.wikipedia.com